IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"नयी शिक्षा नीति (NEP-2020)- एक मूल्यांकन"

***डॉ. अनिल कुमार**
असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
श्री बजरंग पी.जी. कॉलेज,
सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract-: भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में लागू की गई नयी शिक्षा नीति (NEP- 2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रयास है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, रोजगारोन्मुखी और मूल्य-आधारित बनाना है। नयी शिक्षा नीति की अपनी कुछ विशेषताएं है जो इसे पहले के नीतियों से अलग करती है। वर्तमान समय तकनीक, शोध और रोजगार का है, जिसको अपनाकर ही कोई देश आगे बढ़ सकता है। नयी शिक्षा नीति वर्तमान में बदलते वैश्विक परिदृश्य के हिसाब से बनाई गयी है। नयी शिक्षा नीति (NEP- 2020) को प्रभावी तरीके से लागू कर के देश को एक तकनीकयुक्त, कौशलपूर्ण, ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनाया जा सकता हैं।

Key words- शिक्षा, नयी शिक्षा नीति-2020, भारतीय शिक्षा व्यवस्था, मानव संसाधन, मातृभाषा, वैश्विक स्तर, बहुविषयक, अनुसंधान, डिजिटल समानता, समग्र विकास।

परिचय- शिक्षा, किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार होती है। एक सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था न केवल योग्य मानव संसाधन तैयार करती है, बल्कि नागरिकों में नैतिक मूल्यों, लोकतांत्रिक चेतना और राष्ट्रीय भावना का भी विकास करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यहाँ शिक्षा सामाजिक समानता, समावेशन और विकास का सशक्त माध्यम है। स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए समय-समय पर नीतियाँ बनाई गयी। वर्ष 1968 और 1986 की शिक्षा नीतियों ने अपने-अपने समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया, परंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति, ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और रोजगार की नई चुनौतियों के कारण शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। रटंत प्रणाली, अंकों पर अत्यधिक निर्भरता, व्यावहारिक ज्ञान की कमी और शोध की उपेक्षा जैसी समस्याएँ लंबे समय से भारतीय शिक्षा प्रणाली की कमजोरियाँ रही हैं।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने जुलाई, 2020 में नयी शिक्षा नीति- 2020 लागू की। यह नीति केवल पाठ्यक्रम में परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण-पद्धति, मूल्यांकन प्रणाली, शिक्षक प्रशिक्षण और शैक्षणिक प्रशासन में मूलभूत बदलाव का प्रयास करती है। नयी शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक चिंतन और जीवन कौशल को विकसित करना है।

नयी शिक्षा नीति- 2020 की पृष्ठभूमि-

भारत में शिक्षा नीतियों का इतिहास लंबा रहा है। 1968 की पहली शिक्षा नीति ने समानता और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया, जबकि 1986 की नीति ने पहुँच और विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया। परंतु समय के साथ यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा व्यवस्था रटंत प्रणाली, अंकों की दौड़ और रोजगार से दूरी जैसी समस्याओं से जूझ रही है।

NEP- 2020 को तैयार करने के लिए विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और आम जनता से सुझाव लिए गए। के. कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिशों के आधार पर यह नीति बनाई गई। इसका लक्ष्य शिक्षा को भारतीय मूल्यों से जोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है।

नयी शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य-

नयी शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।-

1. शिक्षा को बाल-केंद्रित और सीखने को आनंददायक बनाना।
2. रटंत प्रणाली को समाप्त कर समझ और कौशल पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना।
3. सभी वर्गों को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।
4. शिक्षा को रोजगार और जीवन कौशल से जोड़ना।
5. भारतीय भाषाओं, संस्कृति और ज्ञान परंपरा को प्रोत्साहित करना।
6. तकनीक के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।

विद्यालयी शिक्षा में सुधार-

1. 5+3+3+4 संरचना-

नयी शिक्षा नीति में पारंपरिक 10+2 प्रणाली को हटाकर 5+3+3+4 की नई संरचना अपनाई गई है। यह संरचना बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के चरणों पर आधारित है।

जैसे-

आधारभूत चरण (5 वर्ष): 3–8 वर्ष (आंगनवाड़ी और कक्षा 1–2)

प्रारंभिक चरण (3 वर्ष): कक्षा 3–5

मध्य चरण (3 वर्ष): कक्षा 6–8

माध्यमिक चरण (4 वर्ष): कक्षा 9–12

इससे प्रारंभिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो बच्चों की नींव मजबूत करती है।

2. मातृभाषा में शिक्षा-

नीति में कक्षा 5 (संभव हो तो कक्षा 8) तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की सिफारिश की गई है। इससे बच्चों की समझने की क्षमता बढ़ेगी और सीखना आसान होगा।

3. पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में बदलाव- पाठ्यक्रम को हल्का और रोचक बनाया जाएगा।

4. रचनात्मकता, खेल, कला और गतिविधियों को महत्व।

5. बोर्ड परीक्षाओं का बोझ कम करना।

6. योग्यता और समझ पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली।

उच्च शिक्षा में सुधार-

1. बहुविषयी शिक्षा-

NEP 2020 में उच्च शिक्षा को बहुविषयी बनाने पर जोर दिया गया है। विद्यार्थी अब विज्ञान, कला, वाणिज्य जैसी सीमाओं से बाहर जाकर अपनी रुचि के अनुसार विषय चुन सकेंगे।

2. एकाधिक प्रवेश और निर्गमन प्रणाली-

विद्यार्थी किसी भी कारण से पढ़ाई छोड़ने पर भी प्रमाणपत्र या डिग्री प्राप्त कर सकेंगे।

जैसे-

1 वर्ष: प्रमाणपत्र

2 वर्ष: डिप्लोमा

3 वर्ष: स्नातक डिग्री

4 वर्ष: शोध सहित स्नातक डिग्री

3. अनुसंधान और नवाचार-

अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना का प्रावधान किया गया है।

शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण-

शिक्षक किसी भी शिक्षा व्यवस्था की आत्मा होते हैं। NEP- 2020 में 2030 तक चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को अनिवार्य करने का प्रस्ताव है। साथ ही शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास पर भी जोर दिया गया है।

तकनीक और डिजिटल शिक्षा-

नयी शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षण, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और वर्चुअल लैब्स को बढ़ावा दिया जाएगा। हालांकि डिजिटल विभाजन एक बड़ी चुनौती भी है।

परीक्षा प्रणाली में सुधार- तिवारी, विनीत कुमार (2026) के शोध पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के पारदर्शी, निष्पक्ष एवं विश्वसनीय परीक्षा तंत्र के सिद्धांतों का संदर्भ दिया गया है। जिसमें NEET पेपर लीक की घटना के माध्यम से परीक्षा प्रणाली में छात्रों के विश्वास पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, NEP 2020 के अनुरूप मूल्यांकन प्रणाली में सुधार और पारदर्शिता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

नयी शिक्षा नीति के सकारात्मक पक्ष-

1.शिक्षा का समग्र और व्यावहारिक दृष्टिकोण।

2.विद्यार्थियों की रुचि और क्षमता पर आधारित सीखना।

3.भारतीय भाषाओं और संस्कृति को महत्व।

4.कौशल विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा।

5.अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन।

चुनौतियाँ और सीमाएँ-

1.नीति का प्रभावी क्रियान्वयन।

2.राज्यों और केंद्र के बीच समन्वय।

3.पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की कमी।

4.प्रशिक्षित शिक्षकों और अवसंरचना का अभाव।

5.डिजिटल असमानता।

समग्र मूल्यांकन-

नयी शिक्षा नीति- 2020 एक दूरदर्शी और प्रगतिशील नीति है। यह शिक्षा को केवल परीक्षा और डिग्री तक सीमित न रखकर जीवन कौशल और मानवीय मूल्यों से जोड़ती है। यदि इसे सही योजना, पर्याप्त संसाधनों और निरंतर निगरानी के साथ लागू किया जाए, तो यह भारत की शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

तिवारी, विनीत कुमार (2023) के अनुसार नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 का ग्राम स्तर पर मूल्यांकन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि इसमें कई सकारात्मक पहलू हैं। शिक्षा की पहुँच में वृद्धि और पाठ्यक्रम में सुधार इसके मुख्य उद्देश्य हैं। हालांकि, ग्राम स्तर पर संसाधनों की कमी और अन्य संरचनात्मक की कमी जैसी चुनौतियाँ भी हैं। भविष्य में, संसाधनों में वृद्धि और जागरूकता बढ़ाना आवश्यक होगा। इसके अलावा, कार्यान्वयन में सुधार करना भी जरूरी है ताकि NEP के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो NEP शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है और छात्रों के लिए नए अवसर प्रदान कर सकती है। इस प्रकार, NEP के सफल कार्यान्वयन से देश की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकते हैं।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नयी शिक्षा नीति- 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की दिशा में एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी पहल है। यह नीति शिक्षा को केवल परीक्षा, अंक और डिग्री तक सीमित न रखकर ज्ञान, कौशल, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के समग्र विकास से जोड़ने का प्रयास करती है।

विद्यालयी स्तर पर मजबूत आधार, उच्च शिक्षा में बहुविषयी दृष्टिकोण, अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन तथा शिक्षक शिक्षा में सुधार, ये सभी पहलू इस नीति को विशेष बनाते हैं। हालाँकि, किसी भी नीति की सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, अवसंरचना का विकास, डिजिटल असमानता को कम करना और केंद्र तथा राज्यों के बीच समन्वय, ये सभी ऐसे कारक हैं जिन पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि इन चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया तो नीति के उद्देश्य कागज़ों तक ही सीमित रह सकते हैं। यदि, नयी शिक्षा नीति- 2020 को चरणबद्ध योजना, पर्याप्त संसाधनों, निरंतर निगरानी और समाज की सक्रिय भागीदारी के साथ लागू किया जाए, तो यह भारत को एक ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आने वाली पीढ़ियों के भविष्य निर्माण में यह नीति एक मजबूत आधार सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ-

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). नयी शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.
2. कस्तूरीरंगन, के. (अध्यक्ष). (2019). प्रारूप नयी शिक्षा नीति. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.
3. कुमार, कृष्ण. (2018). भारत में शिक्षा, लोकतंत्र और विकास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2021). नयी शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा सुधार. एनसीईआरटी.
5. अग्रवाल, जे. सी. (2014). शिक्षा के सिद्धांत एवं आधार. शिप्रा पब्लिकेशंस.
6. तिलक, जे. बी. जी. (2015). भारत में शिक्षा, गरीबी और विकास. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
7. यादव, एस. आर. (2017). भारतीय शिक्षा प्रणाली: समस्याएँ और समाधान. राज पब्लिशर्स.
8. शर्मा, आर. ए. (2016). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. आर. लाल बुक डिपो.
9. मिश्र, के. एन. (2019). उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और सुधार. वाणी प्रकाशन.
10. पाण्डेय, रामशरण. (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर.
11. विश्व बैंक. (2018). भारत में मानव संसाधन विकास रिपोर्ट. विश्व बैंक प्रकाशन.
12. यूनेस्को. (2017). शिक्षा 2030: वैश्विक शिक्षा एजेंडा. यूनेस्को.
13. . www.drishtiias.com

14. Tiwari, Vinit Kumar,"Evaluation of the new education policy at the grass root level", International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), ISSN:2320-2882, Volume.11, Issue 12, pp.i316-i320, December 2023, Available at :http://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2312936.pdf
15. Dr. Vinit Kumar Tiwari, "NEET Paper Leak and Students' Trust in Public Examination System: An Educational Perspective", International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), ISSN:2320-2882, Volume.14, Issue 7, pp.f760-f765, July 2026, https://doi.org/10.56975/ijcrt.v14i7.312277